सत्पंथ धर्म दर्शन



।। श्री निष्कलंकी नारायण महाप्रभुजी ।।

।। भक्तजनो प्रति दो शब्द ।।

वर्तमानकाल में सामान्यतः मानव जीवन ज्यादा प्रवृत्तिमय हो गया है । सांसारिक कठिनाईयाँ भी बढ़ गई है । इसी परिस्थिति में प्रभु का स्मरण करना और धर्म कार्य में मन लगाना अति आवश्यक है ।

सत्पंथ धर्म में सद्गुरु श्री इमामशाह महाराजने मानव कल्याण के लिये जप-पूजा- और नाम-स्मरण का ज्यादा महत्त्व दिया है । किसी भी स्थितिमें ईश्वर को भुलना नहीं चाहिये ।

परिवार में छोटेसे लेकर बड़े तक, सभी के लिये सुवविधापूर्ण प्रार्थना पाठ एवं पूजा के मंत्र आदि, जो सभी भक्तजनो को उपयोगी बनेगा । और सद्गुरुजी की सौ शिक्षा याने उपदेश का पालन करने से जीवन सुखमय बनेगा ।

सत्पंथ धर्म दर्शन



।। श्री निष्कलंकी नारायण महाप्रभुजी ।।

।। भक्तजनो प्रति दो शब्द ।।

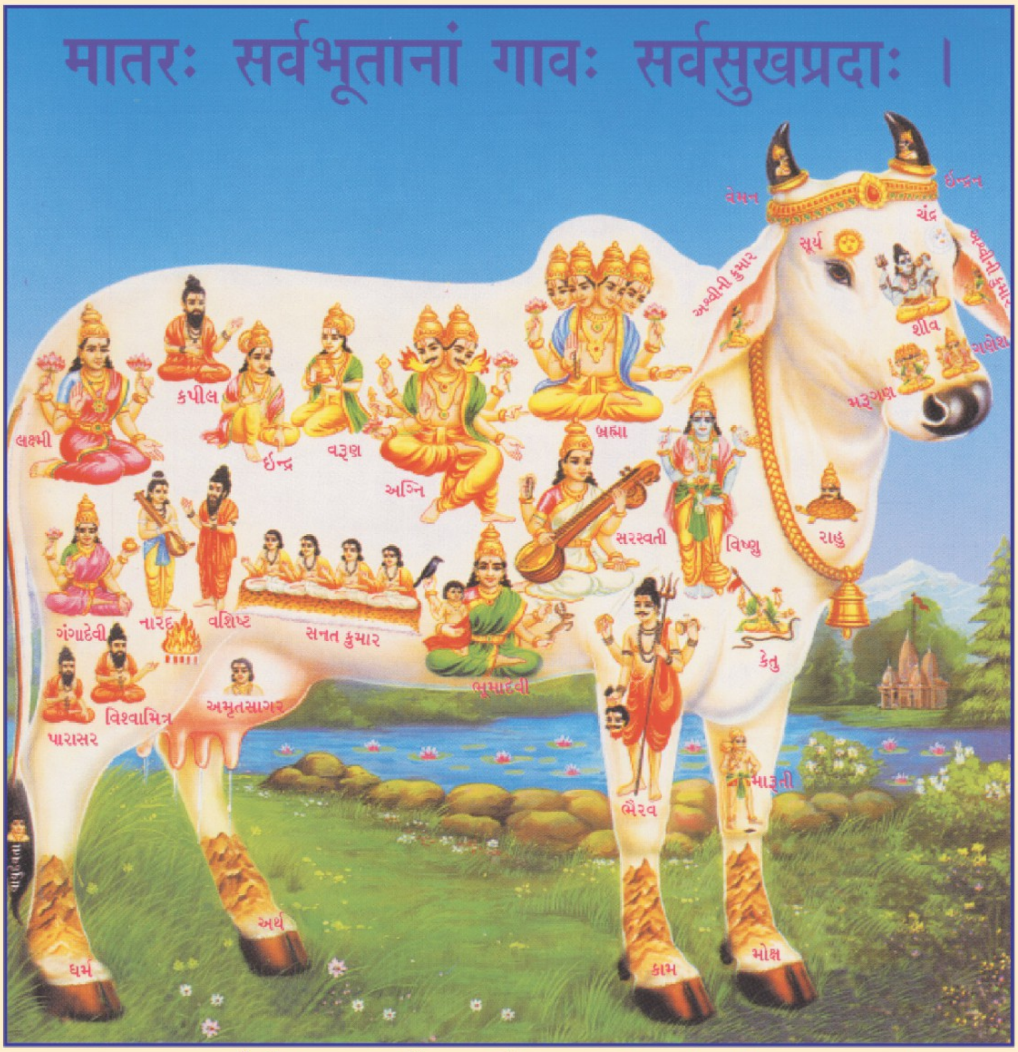
वर्तमानकाल में सामान्यत: मानव जीवन ज्यादा प्रवृत्तिमय हो गया है । सांसारिक कठिनाईयाँ भी बढ़ गई है । इसी परिस्थिति में प्रभु का स्मरण करना और धर्म कार्य में मन लगाना अति आवश्यक है ।

सत्पंथ धर्म में सद्गुरु श्री इमामशाह महाराजने मानव कल्याण के लिये जप-पूजा- और नाम-स्मरण का ज्यादा महत्त्व दिया है । किसी भी स्थितिमें ईश्वर को भुलना नहीं चाहिये ।

परिवार में छोटेसे लेकर बड़े तक, सभी के लिये सुवविधापूर्ण प्रार्थना पाठ एवं पूजा के मंत्र आदि, जो सभी भक्तजनो को उपयोगी बनेगा । और सद्गुरुजी की सौ शिक्षा याने उपदेश का पालन करने से जीवन सुखमय बनेगा ।



realpatidar.com



एतद् वै विश्वरूपम् सर्वेरूपम् गो रूपम् ॥२५॥ (अ.कांड.-९, सू.-१२, मं.-२५)

अर्थ : (एतत् वै गोरुपं) यह निःसन्देह गौ का रूप है, यही (विश्वरुपं सर्वरुपं) गौ का विश्व रूप और सर्व रूप है ॥ ॥२५॥

वशा घौर्वशा पृथिवी वशा विष्णुः प्रजापतिः ।
वशाया दुग्धमपिबन्त्साध्या वसवश्च ये ॥३०॥ (अ.कांड.-१०, सू.-९, मं.-३०)

अर्थ : (वशा घौः) वशा घौ है, (वशा पृथिवी) वशा ही पृथिवी है, (वशा प्रजापति विष्णुः) वशा ही प्रजापालक विष्णु है। (ये साध्याः वसवः च) जो साध्य और वसु है, वे - (वशायाः दुग्ध अपिबन्) वशा गौका दूध पीते हैं ॥३०॥

वशाया दुग्धं पीत्वा साध्या वसवश्च ये ।
ते वै ब्रध्नस्य विष्टपि पयो अस्या उपासते ॥३१॥ (अ.कांड.-१०, सू.-९, मं.-३१)

अर्थ : (ये साध्याः वसवः च) जो साध्य और वसु है वे (वशायाः दुग्धं पीत्वा) वशा गौका दुध पीकर पश्चात् (ते वै ब्रध्नस्य विष्टपि) वे स्वर्ग के स्थान में (अस्याः पयः उपासते) विष्णुः इसके दूधकी प्राप्ति करते है ॥३१॥



सद्गुरु श्री अम्मरतेज ऋर्षि
(कर्तायुग) ऋग्वेद

सद्गुरु श्री वशिष्ठ ऋर्षि
(त्रेतायुग) यजुर्वेद





सद्गुरु श्री वेदव्यास ऋषि
(द्वापरयुग) सामवेद



सद्गुरु श्री इमामशाह महाराज
(कलियुग) अथर्ववेद

"ओम - दर्शन"



त्रयः सुपर्णास्त्रिवृता यदायन्नेकाक्षरभिसंभूय शक्राः ।
प्रत्यौहन्मृत्युममृतेन साकमन्तर्दधाना दुरितानि विश्वा ॥

(अथर्ववेद कांड-५, सू.-२८, मं.-८)

जब समर्थ तीन सुवर्ण तिहरे होकर एक अक्षर में सब प्रकार मिलकर रह रहे हैं। वे अमृत के साथ सब अनिष्टों को मिटाकर मृत्यु को दूर करते है।

तीन बड़ी शक्तियाँ है जो एक अक्षर (ॐ) में रहती हैं। उस अमृत से सब अनिष्ट दूर होते है और मृत्यु का भी भय नहीं रहता है। एक अक्षर ओम् में अ-उ-म् रुपी तीन महा शक्तियाँ निहित है। ये अकार, उकार व मकार रुपी तीन शक्यिाँ है, जो तीन अक्षर यज्ञोपवीत के तीन सूत्र समजने चाहिए। इन तीनों के संयोग से ओंकार रुपी महानाद उत्पन्न होता है। ये तीन अक्षर-तीन अवस्थाए जाग्रत स्वप्न व सुषुप्ति के प्रतिक हैं। जो मानव जीवन में व्याप्त है। ओंकार नाद से आनन्द की अनुभूति करनी चाहिए और मन की एकाग्रता बढ़ानी चाहिए। स्थिर बुद्धि से किये गये पुरुषार्थ अनिष्ट से बचातें हैं और मृत्यु नहीं होने देते हैं।


અથર્વવેદ આધારીત
॥ સત્પંથ વારિયજ્ઞ ॥
તેતરીસ કરોડ દેવો
બ્રહ્મા-વિષ્ણુ-મહેશ
આદ્ય-શક્તિ





।। ૐ શ્રી નિષ્કલંકી નારાયણ પ્રસન્નોસ્તુ ।।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।















हनिष्यति कलेरंते म्लेच्छोतुरंगवाहनः ।
धर्म संस्थापनार्थाय तस्मै कल्क्यात्मने नमः ।।
પંચરત્ન ગીતા-૧૦





ભાવાર્થ :
ધર્મની થયેલી હાની પછી ધર્મની પુનઃ સ્થાપના
માટે કલિયુગના અંતે શ્વેત અશ્વારૂઢ થઈને જે
અવતાર ધારણ કરીને અધર્મીઓનો નાશ
કરશે તે કલ્કિ ભગવાનને હું નમસ્કાર કરું છું.


કર્તાયુગેશ્રી મ.ક.વ.શ્રી નરસિંહ
સત્ પંથ ધર્મ ઋગ્વેદે પ્રવર્તતે.
ૐ શાંતિ... શાંતિ... શાંતિ...
ત્રેતા યુગે શ્રી વા.પ.શ્રી.રામ
સત્ પંથ ધર્મ યજૂર્વેદે પ્રવર્તતે.
દ્વાપર યુગે શ્રી કૃષ્ણ, બુધ્ધ
સત્ પંથ ધર્મ સામવેદે પ્રવર્તતે.
કલિયુગે શ્રી નિષ્કલંકી નારાયણ નમઃ
સતપંથ ધર્મ અથર્વવેદે પ્રવર્તતે.
શ્રી આધશક્તિ
त्रि देव ज्योति दर्शन
તેત્રીસ કોટી દેવતાઓ
॥ શ્રી નિષ્કલંકી નારાયણ નું આસન ॥
महा यज्ञ पूजार्थे अथर्ववेदी मोक्षतम
जांबुद्विपे कुवारीका क्षेत्रे
પૂજાની ગાદી
सत्यमेव जयते
ઘટ પાટ
શ્રી૧
શ્રી૧૦૮


સદ્‌ગુરુ શ્રી ઈમામશાહ મહારાજ

सद्‌गुरु श्री इमामशाह महाराज का शुभ संदेश

ध्यान मूलं गुरोर्मूर्तिः, पूजा मूलं गुरोः पदम् ।
मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरोः कृपा ।

卐

सद्‌गुरु श्री इमामशाह महाराज जब भारतकी पावन धरती पर ई.सन् चौदवीं सदी में जन्म धारण करके और अपने कदमों को रखे और उन्होंने भारतीय वांग में मूल श्रूत भगवान वेद का दर्शन किया । वेद प्रतिपादित वैदिक प्रणाली जो धर्म था उस धर्म का उन्होंने स्वीकार कीया । ऐसा नहीं है की सद्‌गुरु श्री इमामशाह महाराजने किसी नये धर्मका निर्माण किया है, की धर्म की प्रतिष्ठा की हो, ऐसा नहीं है बल्के जो अनादि काल से चलते आ रहा वैदिक धर्म को श्री इमामशाह महाराजने स्वीकार किया । ऐसे इमामशाह महाराजने जब देखा की भारतकी पावन धरती पर रहने वाले करोडो हिन्दुओ अपने अनादि कालीन वैदिक धर्म को भूल रहे हैं और अनादिकालीन वैदिक धर्म को भूलने के कारण दुःख और विपत्ति के शिकार हो रहे हैं, तो बडी ही इमानदारी से इस करोडो आर्यव्रत् में रहनेवाले हिन्दुओं को वैदिक धर्म का संदेश देने का उत्तरदायित्त्व श्री इमामशाह महाराजने स्वीकार किया और ऐसे वैदिक धर्म का संदेश देने के कारण करोडों करोडों आर्य हिन्दुओ ने श्री इमामशाह महाराज को अपना प्रणेता और अपना पूज्य माना । इस लिये माना की इनके संदेश से हम सबका कल्याण हुआ ।

भारत देश धर्म परायण देश है । यहाँ हिन्दु धर्म के सनातन मार्ग पर चलने वाले अनेक संप्रदाय हैं । ऐसे संप्रदायो में एक है सत्पंथ धर्म ।

यह सत्पंथ एक विशिष्ट प्रकार का धर्म है । जिसके मूल तत्त्व का आधार और आरंभ सनातन मार्ग से हुआ है । इस लिये हिन्दु संस्कृति की सात्त्विक विचार धारा से संलग्न, तत्त्व ज्ञान का भरपूर खजाना इस धर्म में है । इस लिये सत्पंथ धर्म के सिध्धांत और आदर्श का प्रतिपालन ही मोक्ष मार्ग का उत्तम साधन माना गया है ।

यह पवित्र सत्पंथ धर्म के श्री इमामशाह महाराज एक योगी संत धर्मात्मा

थे । वह शुध्ध ब्रह्म तत्त्व और आदि सनातन हिन्दु धर्म के प्रखर अभ्यासी और हिमायती थे । उन्हों ने जीवन पर्यंत हिन्दु धर्म का शुध्धाचरण प्रेरित सत्पंथ का मार्गदर्शन किया है ।

वो हर समय कहते थे कि,

'सनातन सत्पंथ धर्म युग धर्म है । और इस धर्म का आचरण करनेवाला सच्चा सत्पंथी है ।'

सत्पंथ ऐसा मार्ग है जो सनातन मार्ग से मिलता आता है । श्री इमामशाह महाराज इसके प्रवर्तक है । चौदवी सदीमें वो गुजरात के अहमदाबाद जिलान्तर्गत्त पीराणा स्थान में आये हुए थे । और उन्होंने अपने सनातन मार्ग का अनुसरण करते उपदेश दिया है । उसमें सत्पंथके बारे में तत्त्वोपदेश दिया है । उसमे पहला एक तत्त्व है कि वे निर्गुण निराकार ईश्वर की उपासना करने वाले है । ईश्वर का स्वरूप निर्गुण निराकार सत् चित् आनंद स्वरुप है, इसके ध्यान के लिए सत् चित् आनंद का ध्यान ज्योति स्वरुप से होता है । क्यों कि सभी प्राणी मात्र के हृदय के अन्दर वह परमात्मा सत् चित् स्वरूप से बैठा हुआ है । उसका ध्यान करनेका स्वरूप याने ज्योति स्वरूपा ध्यान है । उसकी कोई मूर्ति नहीं है । उसको कोई हाथ पैर वगेरे नहीं है । वो निराकार स्वरूप है । ज्योति स्वरूप है । इसी लिए उसका ध्यान करना एक तत्त्व है । दूसरा तत्त्व है सनातन का ''ॐ का स्मरण । ॐ प्रणव ब्रह्म'', इस जगत में सभी से श्रेष्ठ एसा महा मंत्र है । जीतने भी महा मंत्र है, बीज मंत्र मूल मंत्र है उसमे एक श्रेष्ठ मंत्र है 'ॐ' । जिसके स्मरण से जीव प्राणी मात्र का अविद्या रूपि अंधकार नष्ट होकर सब ज्ञान प्राप्त हो जाता है । और मृत्यु का भय दूर होता है । इस लिए श्री इमामशाह महाराजने ॐ की शरुआत से की है । अपनी पूजाविधि मे जीतने भी मंत्र बतलाये हुए है । उसे ॐ का उच्चार करने का आदेश दीया है । तिसरी बात आती है घटपाट की पूजा । यह पूजा कर्मकांड की है । हरेक संप्रदायमें कर्मकांड का आयोजन किया जाता है । क्यों कि मनुष्य शुध्धि के लिए कर्मकांड की बहुत आवश्यकता है । कर्मकांड करते करते जीवात्मा सकर्म मार्ग से निष्काम तक पहुँच जाता है । इस लिए पहली भक्ति है कर्मकांड की, इस लिए यहां सनातन सत्पंथ मार्ग में कलश

पूजा बतलाई गई है । जिसके द्वारा इस विश्व में व्यापक अन्यान्य देवी देवताओं की उपासना भक्त कर सकता है । सूर्य, चंद्र, इन्द्र, वायु, वरुण, अग्नि, सोम, विश्वकर्मा, विराता आदि अनेकानेक देवताओं जिन पर मनुष्य जीवन उपलंबित रहेता है । जिसकी उपासना करने से मनुष्य मुक्ति तक पहुँच जाता है । यह पूजा अथर्ववेद के आधार पर श्री ईमामशाह महाराजने बतलाई है ।

और चौथी बात आती है अवतार वाद, यानि कि अवतार की उपासना । युग धर्म के अनुसार इस कलियुगमें जो होनेवाला अवतार है श्री निष्कलंकी नारायण भगवान की उपासना करने से, उसका नाम स्मरण और गायत्री मंत्र से ध्यान चिंतन करने से श्री निष्कलंकी नारायण भगवान अपने हृदय में प्रगट होते है । श्री निष्कलंकी नारायण भगवान अब प्रगट नहीं है । फिर भी उसका स्वरूप प्रगट करना हो तो उसका ध्यान अपने हृदय में अंतःकरण में उसका ध्यान स्मरण करने से वो अपने हृदयमें स्थित होते है । ये ध्येय और उद्देश्य श्री ईमामशाह महाराजजी ने बतलाया है ।

इस ज्ञानी और योगी धर्मात्मा ने मानव कल्याण का मुख्य साधन शुद्धाचरण और सात्त्विकता है, ऐसा द्रढतापूर्वक कहकर प्रत्येक मनुष्य को अपनी दिनचर्या में विधिवत् पालन करने का आदेश दिया है ।

विशेषतः सर्व धर्म समभाव और सहिष्णुता युक्त आदरणीय का पालन करने का उपदेश देकर जगत के सभी संत, महंत, साधु, ऋषिमुनियों को बडा आदर दिया है । उनकी द्रष्टि से सभी धर्म और संप्रदाय मानव मात्र को सत्य के मार्ग पर ले जाने वाले हैं । ऐसे सभी सामान्य मनुष्य, धर्मकी सच्ची भावना, भजन, पूजा, जप-तप सेवाभाव, संत समागम और व्रत द्वारा प्राप्त कर सके यह उद्देश्य से श्री इमामशाह महाराजने घटपाट पूजन का आदेश देकर सरल साधन प्रदान किया है ।

दान धर्म का महत्त्व और महिमा प्रदर्शित करते हुए उन्होंने कहा है, कि मानव मात्र का अपनी निजी कमाई का दसवाँ या बीसवाँ हिस्सा देवमंदिर या सुपात्र स्थान में दान के रूप में अर्पण करना चाहिये ।

शुद्धाचरण का पवित्र मार्ग दिखाते हुए सत्पंथ के श्री इमामशाह महाराजने उत्तम और उच्च कोटि के तत्त्वज्ञान से परिपूर्ण ज्ञानपद साहित्य का निर्माण

किया है । जिसमें संतवाणी, योगवाणी, गुरुवाणी, आगमवाणी, शिक्षापत्री और अमृतवाणी जैसे ग्रंथ, प्रथम श्रेणी के माने जाते हैं । यह सभी ग्रंथ निर्माण का मूलाधार अथर्ववेद है । जिसके फल स्वरूपण उन्होंने 'मूलबंध' जैसे अद्वितीय हस्त लिखित महाग्रंथ में समस्त ब्रह्मांड के देवी देवताओं की उपासना हेतु मंत्र पूजा आदि, मानवो के जीवन-मृत्यु की उद्धाधारक संस्कार विधि प्रस्तुत की है । पिण्डदान द्वारा मृतात्मा को शांति और मोक्ष देनेवाली उटासरण की सात्विक क्रिया का निर्देश किया है । इसके अतिरिक्त जन्म-मरण की शास्त्रोक्त क्रियाओ का सूतक-प्रायश्चित और देह-मन शुध्धियों की आंतरबाह्य प्रक्रिया प्रदर्शित करनेवाली मंत्र विधि भी दिखाई है । और सारा ब्रह्मांड सर्जनहार निरंजन निराकार आद्य नारायण से देव और ''ॐ'' प्रणव मंत्र का अध्ययन और ब्रह्मा, विष्णु, महेश और शक्ति माता की ज्योति पूजन करना यह सत्पंथ की महत्त्वपूर्ण प्रणालिका है ।

वेद-उपनिषद और पुराण धर्मग्रंथो का अध्ययन द्वारा इन युग पुरुष ने भगवद्गीता, भागवत्, रामायण और महाभारत जैसे धर्मग्रंथो को पवित्र माने हैं और दशावतार का वास्तविक महत्त्व दिखाकर, ईश्वर प्रेरित युग धर्म के अवतार कार्य की अर्थ पूर्ण समीक्षा करके, दशवाँ अवतार श्री निष्कलंकी नारायण भगवान की पूजा-उपासना करने की प्रेरणा दी है । इसके फल स्वरुप सत्पंथ धर्म में श्री निष्कलंकी नारायण भगवान को आराध्य देव मानकर स्थापित करने का आदेश दिया है ।

व्रत-त्यौहार एवं तिथि-त्यौहारों को उत्सव के रूप में मनाने के लिये गुरुवार, चंद्रदर्शन, गुडी पडवो, गुरुपूर्णिमा, राम नवमी, जन्माष्टमी, दशहरा, दिपावली या एकादशी को अग्रस्थान दिया है ।

इसके अतिरिकत आत्मशुध्धि का आधार शरीर शुद्धि है, ऐसी हेतुलक्षी बात समझाते हुए श्री इमामशाह महाराजने मादक पदार्थ का सेवन विष समान है ऐसा कहकर निषेध बताया है और अहिंसा, प्रेम, दया, सद्भाव, सेवा एवं विनय-विवेक जैसे सद्गुणो का प्रतिक्षण पालन करने का परम कर्तव्य माना है ।

ऐसे अनादि कालसे प्रचलित पवित्र सत्पंथ धर्म की वर्तमान परिस्थिति की वास्तविक समीक्षा करते हुए प्रवर्तक तत्त्वचिंतको और धर्माचार्यो के मतानुसार

सत्पंथ धर्म, हिंदु सनातन धर्म प्रेरित पंथ है । यह पवित्र धर्म मार्ग को मानने वाले अनुयायीओं की संख्या नौव लाख से भी कहीं अधिक है । जिस में हिन्दु जाति के कुणबी, राजपूत, लेउवा-कडवा पाटीदार, मराठे, गुर्जर, भावसार, साली, माली, कोली, सुतार, भोइ, मछियारे, राणा, गौचरी, पंसारी, आदिवासी, ठाकुर, बारेया और यादव जैसे अनेक जाति-उपजाति के लोगों का समाविष्ट होता है । जो गुजरात, कच्छ, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान और अन्य प्रदेशों के निवासी है ।

विद्यमान परिस्थिति में यह धर्म के ६०० से भी अधिक मंदिर एवं पूजा स्थान है । जहाँ नियमित रूप से पूजा-अर्चना, आरती, भजन, सत्संग प्रतिदिन प्रातः संध्या होते रहते हैं ।

ऐसो पवित्र सत्पंथ धर्म का प्रमुख धर्मस्थान, गुजरात प्रदेश के अहमदाबाद के नजदीक सत्पंथ प्रेरणा पीठ-पीराणा नामक गाँव में स्थित है । जहाँ श्री इमामशाह महाराज का भव्य और पवित्र समाधि स्थान है । जो सत्पंथ धर्म की गुरुगादी भी मानी जाती है ।

कहा जाता है कि यह सुंदर मनभावन स्थापत्य का निर्माण सद्गुरुजी ने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में अपने निजी मार्गदर्शन से करवाया था । सामान्यतः ६०० वर्ष पूर्व निर्माण किया गया यह सुंदर धर्मस्थान का महत्त्व अलौकिक है । जो अन्य धर्म स्थानों की तुलना में अलिप्त प्रतिभा प्रस्तुत करता है । उसके प्रवेशद्धार की रचना वैदिक परंपरानुसार की गई है । भक्ताजनों को शांति से एक चित्त होकर पूजा-अर्चना करने के लिये यहाँ विशाल पांगण की सुविधा है । समाधि स्थान के आसपासका पवित्र वातावरण मन अंतर को ह्रदयगंम है और भाव विभोर बना देता है । यहां पूज्य सद्गुरु श्री इमामशाह महाराजके समय से ही प्रजवलित शुध्ध घी की अखण्ड दिव्य ज्योत के दर्शन से भक्तजन धन्यता का अनुभव करते हैं । समाधि के पास पुरातन काल से रखी गई पवित्र चरणपादुका को प्रति वर्ष गुरुपूर्णिमा के अवसर पर पंचामृत से प्रक्षालन करके उसका विशेष पूजन होता है ।

इन युग पुरुष ने अपने स्वयं मार्गदर्शन से निर्माण किये हुए, पवित्र स्थान के स्थापत्य का दीर्घद्दष्टि से निरीक्षण करने से एक अद्वितीय और विशिष्ट

प्रकार का सर्जन द्रष्टिगोचर होता है । ऐसी रचना अवरणिय है ।

मुख्य शिखर के आसपास उत्तर-दक्षिण पूर्व पश्चिम और अग्नि, नैऋत्य, वायव्य और इसान कोनों में नयन रम्य सुवर्ण जडित कलश देदिप्यमान द्रष्टिगोचर होते है । इस प्रकार यह समाधि स्थान के नौव शिखरे हैं । जिस में वास्तुकला जैसी वैदिक परंपरा को लक्ष्य में रखकर देवी देवताओं का पूजन और उनकी कृपा द्दष्टि का अस्तित्व यहां अग्रस्थान पर है ।

पारंपरिक रीति से इस धर्म स्थान की गणना पात्र जीवंत और प्रत्यक्ष विशिष्टताएँ इस सत्पंथ धर्म के योग पुरुष की योग साधना का सचोट प्रमाण देते हुए कुछ साधन यहां विधमान हैं ।

समाधि स्थान के विशाल आरसपहाण जडित प्रांगण में एक ऐसा आरस पत्थर हैं, कि जिस पर बैठकर सद्गुरुजी लोगो को बोध-उपदेश देते थे । इस पत्थर की विशिष्टता यह है कि मध्याह्न दोपहर के उग्र तापमान से सभी आरस पत्थर अधिक गरम हो जाते हैं, परंतु यह एक ऐसा पत्थर है कि जो असह्य गरमी में भी ठंडा-शितल रहता है । सचमुच यह एक अदभूत और उल्लेखनीय बात है ।

यहाँ प्रांगण में १०८ फूट उँचा ध्वज स्तंभ है । जिसके अग्रभाग पर 'ॐ' अंकित श्वेत ध्वज लहराता है । जो शांति का प्रतीक माना जाता है । कहा जाता है कि, यह ध्वज-स्तंभ श्री इमामशाह महाराज ने अपने शिष्यों के साथ खडा करके स्थापित किया था । जो आज भी वही स्थान पर स्थित है ।

आज यह पवित्र धाम का बहुलक्षी विकास हो रहा है । वर्ष के प्रत्येक दिन यहाँ अनुयायी और भाविक दर्शनार्थी बडी भारी संख्या में आते रहते है ।

सत्पंथीओं के लिये यहाँ निःशुल्क भोजन की व्यवस्था सद्गुरु श्री इमामशाह महाराज के समय से है । यहां एक गौशाला है । जिसमें गौ पालना होता है । विशेषतः इस पवित्र स्थान की व्यवस्था ट्रस्ट कमिटि द्वारा चलाई जाती है । ट्रस्ट के अध्यक्ष महोदय ही धर्म के आचार्य एवं पीठाधिकारी रहते हैं । जो इस संस्था की संपूर्ण व्यवस्था और धार्मिक गति-विधियों प्रति कार्यभार संभालते हैं ।

इस संस्था और संप्रदाय के वर्तमान पीठाधिकारी का सभी अनुयायी और भाविक पूजनीय भावसे सम्मान करते है ।

हिन्दु सनातन धर्म की भारतीय संस्कृति को गौरवशाली बनानेवाले लोग, उत्सव और मेले इस पवित्र स्थान की निराली प्रतिभा है । चैत्र सुद-दूज का अमृत महोत्सव (संघ मेला) यहां का सर्वोत्तम उत्सव है । कच्छ, गुजरात और अन्य प्रान्तों के दूर दूर स्थानों से भाविक भक्त इस उत्सव में बडी मात्रा में पैदल चलकर आते है । प्रति वर्ष हजारों की संख्या में उपस्थित होकर उत्सव मनाते हैं । इसके अतिरिक्त सद्गुरुजी का महोत्सव - चंदनविधि उत्सव, जन्माष्टमी, धरो अष्टमी, गुरु पूर्णिमा आदि उत्सव होते हैं ।

यहां हररोज शाम को घटपाट-वारि पूजन विधि होती है । जिसका पवित्र अन्नकूट प्रसाद और चरणामृत प्रेमपूर्वक ग्रहण करके भक्तजन कृतार्थ होते हैं ।

यहां के समाधि मंदिर के पास एक विशाल पूजा मंदिर में पुरातन काल का श्री निष्कलंकी नारायण भगवानका निज पूजा स्थान है, जो सद्गुरु श्री इमामशाह महाराज के समय से ही यहां स्थित है । कहा जाता है कि श्री इमामशाह महाराज इसी स्थान के पास बैठकर भाविक भक्तजनों को धर्मोपदेश देते थे । यहां पुरातन काल से रखे हुए सद्गुरुजी का मुकुट और चरण पादुका है । जिसका हर दिन पूजन होता है । यहां श्री इमामशाह महाराज के समय का हस्तलिखित 'मूलबंध ग्रंथ' आज भी मौजुद है । विशेषतः कलियुग के अंत में भगवान की भावना से कई श्रद्धालु प्रतीक्षा करते हैं ।

यहां सद्गुरु श्री इमामशाह महाराज के समाधि स्थान के पास एक अद्भूत प्रणालिका पुरातन काल से प्रचलित है । कई श्रद्धालु लोग अपनी मनोकामना एवं शारीरिक-मानसिक दुःखो के निवारण के लिए बेडी पहनते हैं । बेडी लोहे की छोटीसी सलाखों की बनी है । जो हितार्थी को दोनों पांव में पहनाई जाती है । और आगे चलने के बाद जब साहजिकता से खुल जाती है, तो ऐसा माना जाता है कि उसके कष्ट का निवारण होगा या पूछे हुए प्रश्न की सफलता होगी । ऐसी अद्भूत एवं देवी परंपरा से सभी लोग दैव्य शक्ति का अनुभव करते हैं और श्रद्धा से नमन करते है ।

इसी प्रकार भारतीय सनातन मार्ग की धार्मिक परंपरानुसार गति विधि का आचरण यहां पूर्ण श्रद्धा से होता है । और सत्पंथ अनुयायी के लिये पूजा-अर्चना के लिये संपूर्ण सुविधा है । और यहां आनेवाले अनुयायीओं के लिये भोजन और ठहरने की स्वच्छ और सुंदर सुविधा युक्त विशाल अद्यतन अतिथि गृह है ।

विशेषतः इसी संप्रदाय के अन्य धर्मस्थान, गुजरात में खेडा जिले में स्थित दो गांव जिसमें देवा में भाभाराम, रुण में कीकीबाई का सुप्रसिध्ध यात्राधाम है और बडौदा जिल्ले के कुकस गांव में नायाकाका का भव्य मंदिर विद्यमान है । और कच्छ जिल्लेमे नखत्राणामे भव्य यात्राधाम श्री निष्कलंकी नारायणधाम प्रसिद्ध है । अन्यथा नखत्राणासे पंदरह की.मी. पर मोटा कादिया गाँवमे अथर्ववेदी सत्पंथ आश्रम और दरशडी गाँवमे संत मातृश्री कुंवरमा सत्पंथ आश्रम नामक स्थान भी है । और साबरकांठा जिल्ले मे वडालीके पास संत नथ्थुरामबापा आश्रम है और बायड के पास वजेपुराकंपामें संत मातृश्री कुंवरमा आश्रम विद्यमान है । यह सभी तीर्थ स्थानोमे प्रतिदिन सेवा-पूजा होती है और यहाँ अन्नक्षेत्र भी चलते रहते है ।

इसी प्रकार महाराष्ट्र के खानदेश विभाग के फैजपुर गांव में भी करीब ३०० वर्ष पुराना सत्पंथ मंदिर विद्यमान है । जो इसी सत्पंथ का, खानदेश विभाग का पवित्र धर्मस्थान माना जाता है । यहां भी परंपरागत आचार्य पीठाधिकारी होते हैं । जो धार्मिक रीति से सबके वंदनीय होते हैं ।

आज वर्तमान परिस्थितियों में संसार का मानवी धार्मिक रीति से सक्रात्मक मानसिक चिंताओं का सामना कर रहा है । तब सत्पंथ जैसा पवित्र धर्म, एकता-प्रेम और सनातन हिन्दु धर्म की तत्त्वशील प्रणालिकाओं से परिपूर्ण सत्पंथ धर्म के युग पुरुष महात्मा सद्गुरु श्री इमामशाह महाराज का जीवन भी इतना ही शुध्ध और कल्याणकारी है । जो सनातन भक्ति मार्ग को हंमेशा झिलमिलाता रखेगा ।

卐卐卐卐卐

• सत्पंथ का स्वरूप •

(१) द्रढनिश्चय (२) प्रतिज्ञा (३) नियम

(१) द्रढ निश्चय : **सत्य, पुरुषार्थ, प्रेम, समानभाव, अहिंसा, परोपकार, क्षमा ।**
यह सभी तत्त्वों का द्रढतापूर्वक पालन करें ।

(अ) सत्य : वाणी और आचरणमें हरहंमेश सत्य निष्कपट वृत्ति और मृदुभाषी बने ।

(आ) पुरुषार्थ : **धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ।**

धर्म : वेदोक्त मार्ग का श्रद्धा-भाव-प्रेमसे आचरण करें ।

अर्थ : स्वाश्रय और प्रमाणिकता से धनोपार्जन करें । यह सात्त्विक संपत्ति है । अन्याय, जुल्म और अन्य बुरे कार्य से प्राप्त कि हुई संपत्ति का उपभोग करनेवाला व्यक्ति हीन होता है ।
इसलिये न्याय और नीति से धन प्राप्त करना चाहिये ।

काम : विषय वासना और क्षणिक उपभोगमें प्रवृत्त न रहे । वारानाओं पर रांयम रखें । ईन्द्रयाँ को काबू में रखें ।

मोक्ष : वेदोक्त मुक्ति मार्ग की साधनानुसार आवरण करके, मुक्ति का अंतिम ध्येय प्राप्त करने में प्रयत्नशील रहें । ऐसा व्यवहार करने से ही मानव जन्म की सार्थकता होगी । अन्यथा मानवी और पशुमें कोई फर्क न होगा ।

(इ) प्रेम : यह संसार में मानव मात्र समान है । इस लिए हरेक के साथ मन, वचन और कर्म से विनम्र होकर प्रेम-स्नेह से व्यवहार करना चाहिये । प्रेम से करुणा जागृत होती है और करुणा ही दया का पर्यायी भाव है । जो धर्म का मूल तत्त्व भी है ।

(उ) समानभाव : मानव मात्र के आंतर (हृदय) में एक ही आत्मा है । ऐसा आत्मौपम्य भाव रखना चाहिये । हम सब एक ही ईश्वर के संतान है कोई छोटा नहीं, कोई बडा नहीं । ऐसी विशाल द्रष्टि

रखकर सबके साथ बंधुत्त्व भावसे रहना चाहिये ।

(ऊ) अहिंसा : सत्पंथ मार्ग में अहिंसा एक महान तत्त्व है । पशु-पक्षी और अन्य प्राणीको मारने से हिंसा होती है । इतना ही नहीं, 'मार' कहने से या किसी की भावनाओं का खंडन करने पर भी हिंसा होती है । और नैतिक अधःपतन होता है ।

(ए) परोपकार : सन्मार्ग पर चलनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को सहाय करने के लिये हंमेशा तत्पर रहना चाहिये । शुद्ध भावना और निष्काम वृत्ति से दुःखी जनोकी सेवा करना और मानव कल्याण की भावना रखनी चाहिये । सत्पुरुषोंकी सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझना ।

(ऐ) क्षमा : 'क्षमा वीरस्य भुषणम्' यह उक्ति स्मरण में रखते हुए शत्रु हो या कष्ट पीडा पहुचाने वाले को भी क्षमा करना शुभ लक्षण है ।

(२) प्रतिज्ञा : (अ) सत्पंथ में निर्देश की गई सभी प्रतिज्ञा का अक्षरशः पालन करना । सद्‌गुरु श्री इमामशाह महाराजने व्यवहार में कर्तव्य पालन और धर्म कार्य में कैसा आचरण रखना चाहिये, इस संबंधमें जो नियम-पालन का निर्देश किया है, उसका अनुसरण करना ।

(आ) बालकों को सत्पंथ की शिखवण एवं उपदेश से ज्ञात रखकर अपने संतानो को धर्म का शिक्षण देना अति आवश्यक है । जिससे धार्मिक संस्कृति संरक्षित रहेगी ।

(इ) धार्मिक बातोमें चमत्कार या अंधश्रद्धा को दूर करके ज्ञान द्रष्टि का ही अवलंबन चाहिये । जिससे अज्ञानताका भय दूर होगा । वेद, उपनिषदो, सत् शास्त्रो और गुरु वचन पर द्रढ श्रद्धा एवं विश्वास रखना परम कर्तव्य है ।

(३) नियम :

(अ) शरीरशुद्धि (आ) आंतर (हृदय) शुद्धि (इ) व्रत (ई) उपासना (उ) ध्येय

(अ) शरीरशुद्धि : लाइ सूतक याने स्पर्शा-स्पर्श (वृद्धिजनन

-शौच) स्त्री को प्रसूता होने के बाद सवा मास याने ४० दिन और गोत्र जनोको ११ दिन तक सूतक याने स्पर्शा-स्पर्श का पालन करना चाहिये । मृत्यु-सूतक गोत्रजनो को ७ दिन तक रखना चाहिए । रजस्वला स्त्री ४ दिन तक किसी भी चीज का स्पर्श न करें ।

स्नान शौचादि विषय में शास्त्रा-नुसार आचरण करें । सद्‌गुरु वचना-नुसार तीर्थ मंत्रोपचारादि से शुध्ध बने ।

(आ) **आंतर (हृदय) शुद्धि** : मादक एवं नशीले पदार्थ याने लहसुण, प्याज, हिंग, तम्बाकु, अफीण, भांग, गांजा, ताडी, मांस-मदीरा जैसी निषेध चीजों का सेवन न करें । क्योंकि ऐसे पदार्थो का सेवन करने से शरीर को हानी पहूंचती है । प्रभु भजन करनेसे परावृत हो सकते है ।

सुद, सवाई सुद और परस्त्री गमन-चिंतन से भी मनुष्य में हीनता आती है, आत्मा की शक्ति लुप्त हो जाती है । और आसुरी वृत्ति बढती है । यह महापाप से मनुष्य का अधःपतन होता है । इस लिए शास्त्रो में निषध माने गये पदार्थो का त्याग करके सात्विक अन्न और पदार्थो का सेवन करें । इसके एक स्वरूप आत्मा एवं हृदय की शुद्धि होती है । मन-अंतर प्रभु स्मरण में तल्लीन रहता है और दैवी संपत्तिका आविर्भाव होता है ।

(इ) **व्रत** : युगधर्मानुसार प्रत्येक मासकी शुकल द्वितिया और शुक्रवार के दिन जो दूज आती है, (जिसको थावर दूज का महाव्रत कहते है;) उस दिन व्रत रखें ।

दशवंत, सुक्रित, पुण्यतिथि, श्राद्ध, उत्तरकार्य, पिंड - श्राद्ध आदि सत्पंथ की पूजाविधि अनुसार करें ।

महाशिवरात्री, रामनवमी, गोकुलाष्टमी, गुरुपूर्णिमा, होली,

(नवरात्री), गणेशचतुर्थी, दिपावली, अेकादशी, चौदस, अमावस्या आदि तिथि-त्यौहारों का व्रत रखें ।

(ई) उपासना : प्रतिदिन चतुष्ट संध्या अवश्य करें ।
(१) प्रातः सूर्योदयसे पहले, (२) मध्याह्यन बारह बजे,
(३) सूर्यास्त समय, (४) मध्यरात्री.
ॐ प्रणव मंत्रका ध्यान-चिंतन करना और सत्पंथ के वचनानुसार वरुणदेव, वारियज्ञ घटपाट पूजा करें ।

(उ) ध्येय : कलियुग के अंतमें प्रगट होनेवाले दशमा अवतार आद्य विष्णु श्री निष्कलंकी नारायण और आद्य शक्ति माता और प्रणव मंत्र ''ॐ'' आराध्य देव मानना ।

• • •

• सर्व देव ऋषिवर को नमस्कार करने का मंत्र •

ॐ परम कृपालु परमात्मा की कृपासे प्रारंभ करता हूँ । ॐ नमो श्री सद्‌गुरु पात्र ब्रह्मा इन्द्र ईमामशाह आद्य-विष्णु निरंजन निष्कलंकी नारायण आपकी आशिष से....

आद्य नारायण को नमस्कार । ब्रह्मा, विष्णु महेश को नमस्कार । आद्य शक्ति को नमस्कार । श्री निष्कलंकी नारायण को नमस्कार । प्रथम पुरुष को नमस्कार । हरिअंश कुल के समग्र परिवार को नमस्कार । धरती-आसमान को नमस्कार । पवन-पाणी को नमस्कार । चंद्र-सूर्य को नमस्कार । नवलख ताराओं को नमस्कार । बारह मेघ को नमस्कार । नव कुल नाग को नमस्कार । सात समुद्र को नमस्कार । नौसो नव्वाणु नदियों को नमस्कार । ग्यारह रुद्र को नमस्कार । बारह आदित्य को नमस्कार । आठ वसु को नमस्कार । अश्विनीकुमार को नमस्कार । उन्चास मरुतों को नमस्कार । चौदह ब्रह्मांड को नमस्कार । नव ग्रह को नमस्कार । सात वार, सत्ताइस नक्षत्र को नमस्कार । पंद्रह तिथि, बारह करण को नमस्कार । चौबीस मुल्क को नमस्कार । अष्ट कुल पर्वत को नमस्कार । अढारह भार वनस्पति को नमस्कार । चार

वेदो को नमस्कार । चार खाण चार वाण को नमस्कार । उत्तर, दक्षिण, पूरव, पश्चिमको नमस्कार । नवनाथ चोर्यासी सिद्ध को नमस्कार । चौसठ लक्ष देवीओं को नमस्कार । इठयासी सहस्त्र ऋषियों को नमस्कार । एक लाख अस्सी हजार संत-महात्माओं को नमस्कार । अडसठ तीर्थो को नमस्कार । निन्यानवे कोटि झांखा को नमस्कार । छप्पन कोटि मेघा को नमस्कार । बत्तीस कोटि किन्नरों को नमस्कार । पाँच कोटि प्रहलाद को नमस्कार । सात कोटि हरिश्चंद्र को नमस्कार । नव कोटि युधिष्ठिर को नमस्कार । बार कोटि कमला कुंवर को नमस्कार । तेत्तीस कोटि देवों को नमस्कार । सर्व ऋषिवर गत्-गंगा को नमस्कार । दश अवतारों को नमस्कार । मुखी सेवक को नमस्कार । चौद भुवन के देव ऋषिवर को नमस्कार । करण कल्प के अनंत कोटि देवों को नमस्कार ।

स्वामी ! हमारे अपराधों को क्षमा करो । सत्पंथ के मार्ग में रखों । चौर्यासी के फेरे मिटाओं । तेतीस कोटि के मिलाप प्रदान करों । जांबुद्वीप के पति ॥

सद्गुरु श्री इमामशाह महाराज.... ॐ श्री निष्कलंकी नारायण को नमो नमः

• सद्गुरु की (शीखवण) शिक्षा •

सद्गुरुजी की शिक्षा सच्ची । सुणो ऋषिवर बन ऐकांति ॥ १

दिन भर करो सब अपना धंधा । शाम हुए बनो प्रभु का बंदा ॥ २

किसीकी भी मत करना निंदा । जाकर कहना मंदिर में हेजंदा ॥ ३

गुरु मुखे आप रहना रे बंदा । ऋषिवर जनोकी यहीं है संध्या ॥ ४

ऐसी संध्या पूजो ऋषिवर भाई । क्रोध छोडकर करना नहीं ईर्षाई ॥ ५

मन वश में सो ममता मर जाई । धर्मशालामें कभी सोना मत भाई ॥ ६

धर्मशाला में दूजे की बात मत करना । ज्यादा खा कर पेट मत भरना ॥ ७

भरेगें पेट तो प्रमादी बन जायेंगे । आयेगी निंद तो फिर पस्तायेंगे ॥ ८

कम खाने से सब कुछ मिलेगा । जागृति से जीतकर सद्‌गुरु पावेगा ॥ ९
बडे बुझुर्ग की मर्यादामें रहना । अवगुण बडो का जरूर तुम सहना ॥ १०
अच्छे दिन को बरस तुम समजना । मीठें वचन बोलकर प्रेम जीतना ॥ ११
अपने से जो छोटा है भाई । बडा समझकर रहो मेरे भाई ॥ १२
मीठे वचन तुम बोलो मेरे भाई । मुख पर झलकेंगें हीरे मेरे भाई ॥ १३
सद्‌गुरु मिलन का यह है भेद । ऋषिवरों के साथ साथ न रखना खेद ॥ १४
अच्छा सूनकर बुरा आचरना । निश्चय ही भला कभी नहीं होगा ॥ १५
निंद्राधीन बन, प्रमादी मत बनना । वेद वचन है, जुठे मत बनना ॥ १६
कुड कपट सब दिलसे निकालो । अमीरस पीकर पुण्य कमालो ॥ १७
जाकर घर से धर्मशालामें आओ । भाव-भक्ति से कुछ देकर जाओ ॥ १८
श्रद्धा से जो मिले वही तुम लाओ । पूजारी से मत बडपन दिखाओ ॥ १९
बडपन करें जो सबको भाये । दरिद्री बने और न प्रभु को पावें ॥ २०
अधर्मी होकर बने लंपटी । साच न देखे जुठकु प्रचारी ॥ २१
सूतकी बनकर अपवित्र मत रहना । पीडा दुःख, विपत मत सहना ॥ २२
अमीरस पाकर ले लो सुख प्राणी । गुरुजी कभी नहीं त्यजेंगें भाई ॥ २३
धर्मी लडना कभी नहीं जाने । अधर्मी मनमें अच्छा नहीं माने ॥ २४
ज्ञान-ध्यानमें शोच कर देखों । हानी न होवे वही संभालो ॥ २५
धरो ध्यान तुम करो सत्य करणी । गुप्त ज्ञान धरके, करो उत्तम करणी ॥ २६
चुस्त होकर गुण भर लेना । ऋषिवर ग्रहण करो सौ क्रिया ॥ २७
प्रथम अंतर (ह्रदय) निर्मल कर लेना । दूसरा है स्नान करके खाना ॥ २८
दिन रात सत् मार्ग पर चलना । निश्चय सत् वचन तुं वदना ॥ २९
दया रखना दिल में तुं प्राणी । दान दे सुपात्रको जाणी ॥ ३०
दुःख दुसरों का पहचान मेरे भाई । बडे-बुजुर्गका सन्मान कर चाही ॥ ३१
मतकर बढई-गर्व तुं मनसे । क्रोध न करना आज्ञा है, दसवें ॥ ३२

धर्म करने में प्रमाद मत करना । सर्जनहारका ध्यान ही धरना ॥ ३३
नित नित भक्तजनोंको मिलना । संत, ज्ञानी, प्रभु भक्तको पाना ॥ ३४
निश दिन तीर्थ जल तुं पीना । गर्व त्यजकर धर्मी तुं बनना ॥ ३५
ऋषिवर झुठ कभी मत बोलो । अतिथि को अहर्निश सत्कारो ॥ ३६
भूखेको अन्न सदा तुं देना । प्यास प्यासे की बुझाते रहना ॥ ३७
वस्त्रहीननो वस्त्र ही देना । सब साथी का कष्ट मिटाना ॥ ३८
सब सहकर ध्यान ही धरना । अवगुण करने पर गुण ही करना ॥ ३९
कम किसी को देना नहीं । बीना हक्कका लेना नहीं ॥ ४०
पर स्त्री मात समान है भाई । बुरी नजर से मत देखो भाई ॥ ४१
जान-बुझ कर मत दो गवाही । कपट कभी मत करना भाई ॥ ४२
मुखसे बुरा कभी मत कहना । सुद लेनेवाले का अन्न कभी मत खाना ॥ ४३
हाड मांस ग्रहण करना पातक । पशु को पाल कर बेचना नहीं जातक ॥ ४४
धरती हैं माता मूल्य मत करना । पुत्रीका धन ग्रहण मत करना ॥ ४५
थोडीसी भी मत रिश्वत लेना । गलत पत्र कभी मत लिखना ॥ ४६
जाकर शौचालय शुध्ध होना । क्रिया मानकर पवित्र बनना ॥ ४७
मिट्टी लेकर धोना हाथ । स्नान करे बनना पाक ॥ ४८
पाणी लेकर पिशाब करना । आचमन तीन सेवक तुं करना ॥ ४९
शुद्ध जल सदा तुं पीना । जीव हत्या कभी मत करना ॥ ५०
हींग तम्बाकु कभी न खाना । चीज नशीली कभी न लेना ॥ ५१
बैठ नदी-तट खाना नहीं । भोजन झुठा कभी करना नहीं ॥ ५२
निलके वस्त्र कभी पहनना नहीं । निचकी सोबत करना नहीं ॥ ५३
व्रतोपवास करके आश न रखना । पथ्थर जैसेकी स्तुति न करना. ॥ ५४
असत्की अमानत कभी न रखना । मिले अवसरको नहीं गवाना ॥ ५५

मोक्ष मार्गका जपना जाप । बिना पूछे खाना है पाप ॥ ५६
थोडी सी भी घडी चूकना नहीं । ज्यादा भोजन खाना नहीं ॥ ५७
प्रीते न करना लालच आश । माता समान है बडी भौजाई ॥ ५८
दुश्मनी किसीसे करना नहीं । पडौशी को दुःख देना नहीं ॥ ५९
विश्वासघात बडा है पाप । पडी चीज मत लेना भाई ॥ ६०
कलंकित किसी को करना नहीं । कर्ज किरीका रखना नहीं ॥ ६१
धन पराया कभी मत लेना । बनकर पुत्र पडेगा देना ॥ ६२
बुरा शब्द कभी बोलना नहीं । मूर्ख बनकर रहना नहीं ॥ ६३
ज्ञानी सब समदृष्टिसे देखो । दुश्मन करें ऐसा मत करो ॥ ६४
साच-झुठ का विवाद न करना । जुआ-जुगारमें कभी न पडना ॥ ६५
नाच-छंद भवाई मत देखना । वो छल भेदे सद्‌गुरु को खो देना ॥ ६६
भोजन की न कहना बुराई । करो बखान लेकिन मत कहो बुराई ॥ ६७
प्रातः स्नान करके निकलना । दुनिया करें ऐसा मत करना ॥ ६८
तप तीर्थ और करना स्नान । निर्मल होकर धरना ध्यान ॥ ६९
अपने पशु को दुःख न देना । प्रीत दिवानों से कभी न करना ॥ ७०
चलते घुमते खाना नहीं । बुरें द्रश्य कभी देखना नहीं ॥ ७१
लिखा वेदशास्त्रमें वही तुम करना । शुद्ध-बुद्धिसे हरदम रहना ॥ ७२
विष खा कर कभी न मरना । आवागमनके चक्करमें फिर पडना ॥ ७३
जुस्सा जुवानी को वशमें रखना । परस्त्री का कभी संग न करना ॥ ७४
जुठा पानी अग्नि में मत डालों । हरें वृक्ष कभी न काटों ॥ ७५
प्रातःकालमें मत तोडो फूल । पथ्थर पूजने से न मिलेगा मोक्ष ॥ ७६
मूंगे प्राणी की हत्या मत करना । भोजन समय उठ-बैठ न करना ॥ ७७
पशु को जुठन खिलाना नहीं । इज्जत किसकी खोलना नहीं ॥ ७८

दूसरों की बात में दखल न करना । गुरु वचन को भूल न जाना ॥ ७९
पूछे कोई तो अच्छी शीख देना । माला लेकर हरि स्मरण ही करना ॥ ८०
मिले ब्रह्माजी अमीरस पीओ । पालन करो ऋषिवर सौ ही क्रिया ॥ ८१
मुमुक्ष जनको धर्म समझाना सोही, सौ क्रियाकी पहनाइए जनोई ॥ ८२
बने ब्रह्मलीन ब्रह्माजी मिल गये । आवागमनके फेरे मिट गये ॥ ८३
सूनो ऋषिवर तुम यह ब्रह्मज्ञान । करना गतमें गंगास्नान ॥ ८४
ब्रह्मज्ञान सद्‌गुरुजीको भायें । अडसठ तीरथ गुरु चरणमें आये ॥ ८५
सद्‌गुरु जो सब में बैठे । ज्ञान-भाग्यसे सद्‌गुरु को देखे ॥ ८६
ध्यान-ज्ञान देखो शोचकर । सृष्टिमें है देव गुप्त अवतार ॥ ८७
ऋषिवर हो वो रखे ज्ञान । निर्मल हो कर धरना ध्यान ॥ ८८
वशमें है मुनिवर के मन । करते कसोटी काया रतन ॥ ८९
कहत इमामशाह सुणो सब भाई । साथ बैठ कर सब रखो जुगताई ॥ ९०
आद्य सद्‌गुरु तपस्वी कहलाये । वही तपस्वी जांबुद्विपमें आये ॥ ९१
देखो सद्‌गुरु जांबुद्विपमें आयें । गुरुजन मिलकर गुण जो गावें ॥ ९२
जांबुद्विपमें सद्‌गुरु बिराजे । आशा रखो तुम अमरापुर जाये ॥ ९३
ब्रह्मज्ञान से वचन निभाये । एक ध्यान से ऋषिवर भायें ॥ ९४
जिस रूपसे सद्‌गुरुदेव हो । वही रूपको जपते सब रहो ॥ ९५
झुककर करते रहो प्रणाम । जांबुद्विपमें सद्‌गुरु का मुकाम ॥ ९६
पूर्ण प्रेमसे धर्म निभाओ । ऋषिवर तुम अमरापुर जाओ ॥ ९७
अमरभेद से अमर पद लेना । ऋषिवर अमरगढ मे रहेना ॥ ९८
अमर फलका भोजन तुम करना । अनंत काल तक आयु तुम पाना ॥ ९९
सद्‌गुरु वचन एक चितसे निभाना । कहत इमामशाह अमरापुर तुम पाना ॥ १००

卐卐卐卐

|| दशावतार ||

• श्री मत्स्यावतार •

भूतलातलमध्यस्यं शंखासुरं निहत्य च ।
उद्धताः येन वे वेदाः तस्मै मत्स्यात्मने नमः ॥१॥

• श्री कुर्मावतार •

ससागरवना निविभ्रत् सप्तद्विपां वसुंधराम् ।
यो धारयति पृष्ठेन तस्मै कूर्मात्मने नमः ॥२॥

• श्री वाराहावतार •

एकार्णवे हिमग्नां गां वाराहं रूपमस्थितः ।
य उध्धार महीं योऽसो तस्मै कोडात्मने नमः ॥३॥

• श्री नरसिंहावतार •

नारिसंह वपुः कृत्वा यस्त्रैलोक्य भयंङ्करम् ।
हिरण्यकशिपु जघ्ने तस्मै सिंहात्मने नमः ॥४॥

• श्री वामनावतार •

वामनं रूपमास्याय, बलिं संयम्य मायया ।
येन क्रान्तात्स्त्रव लोकास्तस्मै क्रान्तात्मने नमः ॥५॥

• श्री परशुरामवतार •

जमदग्नि सुतो भूत्वा रामः परशुध्रग्विभुः ।
सहस्त्रार्जुनहतैव तस्मै उग्रात्मने नमः ॥६॥

• श्री रामावतार •

रामो दाशरथिर्भुत्वा पौलस्त्य कुल नंदनम् ।
जधान रावणं संख्ये तस्मै क्षत्रात्मने नमः ॥७॥

• श्री कृष्णावतार •

वसुदेवसुतः श्रीमानवासुदेवो जगत्पतिः ।
जहार वसुधात्मारं तस्मै कृष्णात्मने नमः ॥८॥

• श्री बुद्धावतार •

बुद्धरूपं समास्याय सर्व रूपं परायणः ।
मोहयन् सर्व भूतानि तस्मै मोहात्मने नमः ॥९॥

• श्री निष्कलंकी अवतार •

हनिष्यति कलौ मध्ये म्लेच्छांन्तुर्गवाहनः ।
धर्म संस्थापनार्थाय तस्मै कल्क्यात्मने नमः ॥१०॥

Published with the financial assistance from the Ministry of Education and Social welfare, Government of India

हरिसोदरप्रणीत

भारती निरुक्ति

(वेद स्वरूप दर्शन)

ग्रन्थमाला-२

• अनुवादक •

जनस्वामी सुब्रह्मण्य शास्त्री

साहित्यरत्न

• प्रकाशक •

निरुक्त भारती

संस्कृत वाङ्मय परिशोधनालय

शोधन गृह, विजयवाडा-१०

अथर्ववेद (ब्रह्मवेद) और उसकी आवश्यकता

ब्रह्म-कर्तव्य का उपदेश करने में तत्पर होने से, यज्ञ के विषय में अथर्ववेद की आवश्यकता ही होती है । हौत्र, आध्वर्यव एवं औदात्र नामक क्रियाओं का प्रतिपादन करने में ही, ऋग्युजःसाम-वेदो का तात्पर्य है । अतः ब्रह्म-कर्तव्य का प्रतिपादन करने में इनका तात्पर्य नहीं है । क्यों कि, हौत्र का प्रतिपादन करनेवाले ऋग्वेद को, आध्यर्व अथवा औद्गात्र का प्रतिपादन करने में तात्पर्य तो नहीं है । यजुःसाम-वेदों के विषय में भी, ऐसा ही जानना होगा । अतः ब्रह्म कर्तव्य का प्रतिपादन करने के लिए चतुर्थ वेद, को आवश्यकता ही होती है, वह चतुर्थ वेद, अथर्ववेद है ।

किन्तु ब्रह्मत्त्व ऋग्यजुः साम वेदो में यद्यपि स्थूलतः बतालाया गया है, फिर भी वह समग्र नहीं है **। अथर्ववेद ही, समग्र रूप से ब्रह्म-कर्तव्य का प्रतिपादन करनेवाला है ।**

वाक् एवं मन-दोनों से यज्ञ शरीर निर्वर्तनीय है । श्रुतियां बतलाती है कि उसमें से वाग्-रूप शरीरका अर्धभाग, ऋग्-यजुः सामो से और शेष अर्धभाग (मनोरूप) अथर्ववेद से निष्पन्न होता है ।

अत एव वाङ्मनस निर्वर्त्यस्य यज्ञाशरीरस्य अर्धमेव त्रिभिवदेनिष्पाधते । अर्थान्तरं तु अथर्ववेदेनैवेति श्रूयते-सायणः ।

"स वा एष त्रिभिर्वेदैर्यज्ञस्यान्यतरः पक्षं संस्क्रियते । मनसैव ब्रह्मा यज्ञस्यान्यतरं पक्षं संस्करोति ॥" **- गो. ब्रा. ३-२**

"अयं वै यज्ञो योऽयं पवते । तस्य वाक् च मनश्च वर्तन्यौ । वाचा च हि मनसा च यज्ञोऽवर्तत । इयं वै वाक् । अदो मनः । तद्वाचा त्रय्या विद्ययैवं पक्षं संस्कृर्वन्ति मनसैव ब्रह्मा संस्करोति ।" **- ऐ. ब्रा. ५-३३**

स्पष्ट है कि इस प्रकार, अथर्व-वेदीय गोपथ ब्राह्मण तथा ऋग्वेदीय ऐतरेय बाहमण-दोनों से भी बताया जाता है कि वाङ् - मनोरूप यज्ञ शरीर का निष्पादन करने के लिए अथर्व-वेद आवश्यक एवं उपादेय है (द्रष्टव्यसायण रचित अथर्ववेद भाष्य-भूमिका) १ अतः, वह ब्रह्मदेव के नाम से अभिहित होता है ।

"तमृचश्च सामानि च यजूंषि च ब्रह्म चानुव्यचलन् ।" **- अ. वे. १५-६-८**

"ऋचां च वे से साम्नां च यजुषां च बह्मणश्च प्रियं धाम भवति य एवं वेद ।" **- अ. वे. १५-६-९**

"चत्वारो वा इमे वेदा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो ब्रह्मवेदः ॥" **- गो. ब्रा. २-१६**

उपर निर्दिष्ट श्रुति-वचनो में 'ब्रह्म' शब्द से अथर्व वेद विवक्षित होता है ।

॥ अथर्ववेद के नाम ॥

अथर्ववेद के, इस तरह ब्रह्म-वेद के अतिरिक्त अंगिरोवेद, अथर्वागिरोवेद, भृग्वंगिरो वेद, भैषज्य वेद, क्षत्र-वेद - आदि नाम भी श्रुति-प्रसिध्ध है ।

"ता उपदिशति । आंगिरसो वेदः सोऽयमिति ।" **- श. ब्रा. १३-४-३-५**

"तानुपदिशति । अथर्वाणो वेदः सोऽयमिति ।" **- श. ब्रा. १३-४-३-७**

"यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन् ।
सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखं स्कम्भं तं बूहि कतमः स्विदेव सः॥"
- अ. वे. १०-७-२०

"एतद्वे भूयिष्ठं ब्रह्म-यदभृग्वंगिरसः ।" **- गो. ब्रा. ३-४**

"उक्थं......यजु......साम.....क्षात्रं.....वेद ।" **- श. ब्रा. १४-८-१४-२**

"ऋचां च यै स साम्नां च यजुषां च ब्रह्मणश्च प्रियं धाम भवति य एवं वेद ॥"
- अ.वे. १५-६-९

॥ अथर्ववेद का प्राशस्त्य (ब्रह्मत्त्व-संप्रदाय) ॥

श्रीमद् रामायण में वसिष्ठ को "क्षत्रवेदविदां श्रेष्ठो ब्रह्मवेद-विदामपि (१-६५-२३)" - कहकर उनका कीर्तन किया गया है । इस स्थल में व्याख्याताओं ने यह विवरण प्रस्तुत किया है कि ब्रह्म-वेद माने, ऋग्युजः साम-वेद हैं और क्षत्र-वेद माने अथर्व-वेद है । महाकवि कालिदास ने भी वसिष्ठ को 'अथर्व निधि' - कहकर उनका गुण-गान इस प्रकार किया है ।

"अथार्थानिधेस्तस्य विजितारिपुरः पुरः ।
अर्थ्यामर्थपतिर्वाच मादके वदतां वरः ॥" **- रघुवंश १-१६**

"स व भूव दुरासदः परंगुरुणाऽथर्वविदा कृतक्रियः ।
पवनाग्निसमागमोह्ययं सहित ब्रह्म यदस्त्रतेजस ॥" **- रघुवंश ८-४**

इस प्रकार, वसिष्ठ को 'अथर्व-निधि' - कहकर कीर्तन करने से यह संत्रदाय विदित होता है कि ऋग्युजः साम-वेदामिज्ञ के अतिरिक्त जो अथर्ववेदवेत्ता होता है, वही पुरोहित-कृत्य में कुशल, शान्तिक तथा पौष्टिक कर्मो का निर्वहण करने में समर्थ एवं राज-गुरु-पद के योग्य होता है । स्मृति-पुराणादिकों से उक्त विषय का विवेचन यो उपस्थित किया जाता है ।

॥ त्रयी ॥

"त्रय्यां चदण्डनीत्यां च कुशलःस्यात् पुरोहितः ।
अथर्वविहितं कर्म कुर्याच्छन्तिकः पौष्टिकम् ॥"

- कामन्दक ।

"पुरोहितं प्रकुर्चीत दैवज्ञामुदितोदितम् ।
दण्डनीत्यां च कुशलं अथर्वागिरसे तथा ॥"

- याज्ञ. स्मृत. १-३१३

"पौरोहित्यं शान्तिकपौष्टिकादि राज्ञा अथर्ववेदन कारयेत, ब्रह्मत्वं च ।"

- विष्णु पु. १-१०

"पुरोहित्यं तथाऽथर्वमन्त्रब्राह्मणपारगम् ।" **- मत्स्य. पु.**

"अभिषिक्तोऽथर्वमन्त्रैर्मही भुडक्ते ससागराम् ।" **मार्कण्डेय. पु.**

"यस्य राज्ञो जनपदे अथर्वा शान्तिपारगः ।
निवसत्यपि तद्राहं बधते निरुपद्रवम् ॥
"तस्मात राजा विशेषेण अथर्वाणं जितेन्द्रियम् ।
दानसन्मानसत्कारै नित्यं समाधिपूजयेत ॥"

- अथर्व-परिशिष्ट-४-६

"शान्तिपुष्ट्यमिचारार्था एकब्रहार्त्विगाश्रयाः ।
क्रियन्तेऽथर्ववेदेन त्रय्येवात्मीयगोचरा ॥"

- तन्त्रवार्तिक १, ३, ४

इतना ही नहीं, अथर्व-मन्त्र, 'सिध्ध-मन्त्रो' के नाम से भी प्रसिध्ध हैं ।

"न तिथि र्न च नक्षत्रं न ग्रहा न च चन्द्रमाः ।
अथर्वमन्त्रसंप्राप्त्या सर्वसिध्धिर्भविष्यति ॥" **- पद्म. पु**

"यस्तत्राथर्वणान् मन्त्रान जपेच्छ्द्धासमन्वतिः ।
तेषामर्थोद्भवं कृत्स्नं फलं प्राप्नोति स ध्रुवम् ॥"

- स्कन्ध पु. (कमलालय खण्ड)

॥ भारति निरुकित ॥

"अर्थातः संप्रवक्ष्यावि सामर्ग्यजुरथर्वणाम् ।
कर्भभिर्यैरवाप्नोति क्षिप्रे कामान् मनोगतान् ॥"

- वो. ध. सू. ४-१

"इमं मन्त्रं गृहाण त्वं आहवानाय दिवौकसाम् ।
यं यं देवं त्वमेतेन मन्त्रेणा वाहयिष्यति ॥
तेन तेन वशे भदरे स्थातव्यं तं भविष्यति ।
अकामो वा सकामो वा स समेष्यति ते वशे ॥
विबुधो मन्त्रसंशान्तो भवेदभृत्य इवानतः ।
"ततास्तामनवधांगी ग्राह्यामास स द्विजः ॥
मंत्रसंग्राम तदा राजन्नथर्वशिरसि तम ॥"

- भारत ३-३०५-१६ से २० तक ।

इस तरह, उक्त वचन अथर्ववेद का प्राशस्त्य एवं आवश्यकता बतलाते है । इसके अलावा, वे यह संप्रदाय भी बतलाते है कि जो पुरोहित अथवा वसिष्ठ या ब्रह्मा किंवा बृहस्पति अथवा राज-गुरु होता है उसे ऋग्यजुः साम-वेदों के साथ साथ अथर्ववेद में भी परिनिष्ठित होना चाहिए ! श्रुति भी इस प्रकार आदेश देती है कि अथर्ववेद-वेत्ता को ही ब्रह्मा के रूप में वरण किया जाय ।

"अथ प्रजापतिः सोमेन यक्ष्यमाणो वेदान उवाच । कं वो होतारं वृणीयाम् । कं अध्वर्युम् । कं उद्गातारम् । कं ब्रह्माणम् इति । ते उचुः । ऋग्विदमेव होतारं वृणीष्व । यजुर्विद अध्वर्युम् । सामविदं उद्गातारम् । अथर्वागिराविदं ब्रह्माणम् । तथाऽ हास्य यज्ञः चतुष्पात् प्रतिष्ठिति ।"

ब्रह्मा के स्थान में यदि, अथवर्वेद-वेत्ता का वरण नहीं कीया जाय, तो उसका प्रत्यवाय भी श्रुति से या बतलाया गया है ।

"अथ चेत् नैवंविद ब्रह्मणं वृणुते दक्षिणत् एवैषां यज्ञो रिच्यते ।" **- गो. वा. २-२४२० तक ।**

"यथैकपात् पुरुषो यन् अनुभयचक्रो वा रथो वर्तमानो भ्रेष न्येति एवमेवास्य यज्ञो भ्रेषं न्येति ।" **- गो. ब्रा ३-२**

मनोमय आत्म स्वरुप को चतुर्वेदात्मक कहकर, त्रेतिरीय श्रुति ने उसका विवेचन यो उपस्थित किया है ।

"तस्य यजुरेव शिरः । ऋग दक्षिणः पक्षः । सामोत्तरः पक्षः । आदेश आत्मा अथर्वागिरसः पुच्छं प्रतिष्ठा ।" **- ते. उप. २-३-१**

श्रुति यहां, अथर्ववेद का मनोमय आत्म-स्वरूप के पुच्छ के रूप में यानी, आधार के रूप में निर्देश करके, अथर्ववेद की विशिष्टता को प्रतिपादित करती है । सूत संहिता परा-देवी गायत्री के स्वरूप का विवेचन प्रस्तुत करते हुए

अथर्ववेद के प्राधान्य का वर्णन किया गया हैं ।

"ऋग्यजुः सामरूपाश्च पादा अस्याः प्रकीर्तिताः ॥" - **सू. सं. ४६-२१**

शिक्षाद्यंगानि शीर्षाणि वक्त्र मग्नि र्महाद्युतिः ।

"मीमासां लक्षणं तस्याश्चेष्टा चाऽथर्वणी श्रुति : ॥" - **सू. सं. ४-६-१५**

"अथातो धर्मजिज्ञासा-इत्यादिकं म मांसाशासत्रमस्याः तटस्थलक्षणम् । अथर्वणा । "दृष्टा श्रुतिवेदो अस्याश्चेष्टात्मकः । उक्तहि-लक्षणं मीमांसा, अथर्ववेदो विचेष्टितम् इति ।" **- माधवीय तात्पर्यदीपिका ।**

अर्थात ऋक-यजुः-साम, परादेवी गायत्री के पाद है । मीमांसाशास्त्र उसका तटस्थ लक्षण है और अथवर्वेद उसकी चेष्टा है । सूत-संहिता में हि और एक स्थान पर भी, अथवर्वेद का प्राशस्त्य इसे प्रकार बतलाया गया है ।

"शिखिाऽप्याथर्वणी साध्वी सर्ववेदोत्तमो तमा ।
अस्मिन्नर्थे समाप्ता सा श्रुतयश्चापरा अपि ॥
यथा साक्षात्परं ब्रह्म प्रतिष्ठा सकलय च ।
तथैवार्थर्वणो वेदः प्रतिष्ठैवाखिलश्रुतेः ॥
क-दस्तारस्तथा बिन्दुः शक्तिस्तारो महाद्रुमः ।
स्कन्धशाखा अकाराधा वर्णा युद्धत्तथै तु ॥
तारः कन्दः श्रुतेर्जातिः शक्तिराथर्वणो द्रुमः ।
स्कन्धाशाखास्त्रयो वेदाः पर्णा स्मृतिपुराणकाः ॥"

- सू. सं. यज्ञवैभव-खण्ड सू. न. गीता-४-६-१ से २४ तक

अर्थात, ब्रह्म अपने में अध्यरत निरिक्ल विश्व का जैरो आश्रय-रथनीय होता है वैसे ही, रहस्याथ-प्रतिपादिका होने से आथर्वण-श्रुति भ, सकल श्रुतियों की आश्रय-भूता होती है । **अथर्ववेद, एक महा-वृक्ष है. ऋग्यजु साम, उसकी स्कन्ध - शाखाए है और स्मृति-पुराण, उसके पर्ण हैं । इस प्रकार, यहां, बतलाया गया है ।**

प्रतिपक्ष-वादियों से अनावश्यक एवं अनुपादेय के रूप में जिसका अनुमान किया जाता है वह अथर्ववेद, ब्रह्म-कर्तव्य का प्रतिपादक, सिद्ध मन्त्रात्मक एवं निखिल श्रुतियों का आश्रय-भूत है, अतः, सर्वश्रेष्ठ हैं । इसका हमने दर्शन किया है । एतादश अथर्ववेद को, अर्वाचीन कहना समजस नहीं है । इस अथर्ववेद की प्रस्तावना संहिताओं, ब्राह्मणो आरण्यक एवं उपनिषद् - भागो, गुह्य तथा धर्म-सूत्रो और निरुक्त, व्याकरण आदि दर्शनो में बहुलतया दृष्टि-गत होती हैं ।

•••

॥ ऋग्वेदी गायत्री मंत्र ॥

ॐ ॐ ॐ कारम् । अनादि पुरुषम् । न रुपम् । न रेखाः । निष्कलंकः । न पाणिः । न पादः । अभूत् मंगलं वर्तते । ब्रह्मा ॐ ब्रह्मोन्नादः । आद्य रूपः वेदरेखा मात्रः । महातेजाः । परिब्रह्मः । चतुमूर्तिः । इश्वरः, कृतवान् । वेदः परिब्रह्मः । ऋग्वेदो रक्तवर्णः । वर्णादिविष्णुः । ब्रह्मएंश पात्रः । अतीव परिब्रह्मः । परमेश्वरम् परम परमः । परिब्रह्मः । प्रज्वालयति पातकम् । हुताशनमय तेजो एंशादि पात्रम् । वेदः परिब्रह्मः ।

॥ यजुर्वेदी गायत्री मंत्र ॥

ॐ ॐ ॐ कारम् । वेद वायके अक्षरः । ब्रह्म विभूतिः । पूज्यभूतात् परिवर्तते । प्रज्वालयति पातकम् । परमेश्वरम् परिब्रह्मः । रूपरेखः । वेदो अभूत् जगती परमेश्वरः । परापरम् परमः । परिब्रह्मः । एंशादि पात्रो । अभूत् जगती वेदः । परमेश्वरः परिब्रह्मः । सर्वः परिब्रह्मः । शब्दः परमेश्वरः परिब्रह्मः । यजुर्वेदो जरद्वर्णः । वर्णादि विष्णुः परिब्रह्मः ॥

॥ सामवेदी गायत्री मंत्र ॥

ॐ ॐ ॐ कारम् । कृष्णादिवर्णम् । तदा वेदः परमेश्वरः । उपजायमान धर्मः । तदार्ध पातकं प्रज्वाल्यते । सर्वएंशादि, पात्रः । पूजागम् परिब्रह्मः । तत्त्वम् मंगलस्य महदगंम् वर्तते । शब्दश्च वेदश्च परिब्रह्मः । ॐ शब्दः परिब्रह्मः । ॐ चक्षुः परिब्रह्मः । ॐ उन्नादः । महावेदो अङ्गम् परिवर्तते विद्याङ्गम्, परमेश्वरः परिब्रह्मः ॥

॥ अथर्ववेदी गायत्री मंत्र ॥

ॐ ॐ ॐ कारम् । कल्यंगकर्ता । विशतिविस्वापापम् । विश्वाधर्मः । अरूद्धं पातकम् । धर्मोरेखा मात्रः । धर्म इति परिब्रह्मः । अथर्ववेदः श्वतवर्णः । वर्णादिविष्णुः । सविष्णु नारायणः । ब्रह्माऽगम् । ब्रह्मएंशादिः पात्रः । वर्णादि धर्मो

म्लेचोअभूज्जगति । इच्छांगोविष्णुनारायणः । अतः परिवक्ष्यामि महाज्ञानभेदम् । जम्बुद्वीपे कलागम् पवित्रं वर्तमानम् । महाकलियुग उपजायते नारायणः । तेजो भविता अंगकर्ता । प्रज्वालयति पातकम् । अनादिः पुरुषः । मम जीवनं भवति आर्यागम् परिब्रह्मः । षोऽशकलागम् मंगलश्च सत्त्वानि सत्यात्रादि परमेश्वरः परिब्रह्मः । अनादि पुरुष वेलांगम् भवति कर्मायति परिब्रह्मः । स्थले सेवांगम् नमः । सर्व इति परिब्रह्मः । परमेश्वरः परिब्रह्मः ॥

॥ मोक्ष मार्गनी गायत्री मंत्र ॥

ॐ ॐ ॐ कारम् । भरत खंडे इहः वृर्तते । स्वामी वास्ते गतः वर्तते । परम सुखामी द्वीपे सद्वीपे । जंबुद्वीपे । कोटांग कोटांग जीवनंग । परम मुक्तिमयः मिंधः । ओत्रंग देशंग कुमारीका क्षेत्रंग । मुक्त गंग । सत्य मुखंग । वभूत नगर । वैराट वामे भवेतंग । महा सर्सति साभ्रमति

पूर्व त्रष्टे । नवस्थले । गुर्मटे । रेवा ओत्रंग । षोऽश जोजनंग । पंच नदी मूल स्थाने, दिशा ओत्रंग, सत्य रू पी ब्रह्म वायके । महानारायण वचने । कलियुग अंते । बुध्ध शास्त्रगं । हुरावरणे । समावर्तंग । दशांग सुरजांग । महा मंगलंग । कुलपदः देहे । मासे । दिवसे । तिथि । वारे । नक्षत्रे । हुरावरणे स्थापनाए । ब्रह्मांडे । ए ते स्थले उपजंते । निष्कलंकी नारायण परिब्रह्मः । आदे उपजंते । परम् प्रेम होतवंग क्षेत्र । महा कलियुगे कृतवंग । नारायण नवी सृष्टि स्थापंते । तदा होतवंग समात्यंग । छेल्ली संधे । निष्कलंकी नारायण परिब्रह्मः ने नमो नमः ॥



आवृत्ति : दूसरी, प्रत : १०००, प्रकाशन दिनांक : ३०/७/२००७ (गुरु पूर्णिमा)
आवृत्ति : तिसरी, प्रत : २५००, प्रकाशन दिनांक : ३/५/२०१०
आवृत्ति : चौथी, प्रत : ३५००, प्रकाशन दिनांक : १६/११/२०१५

: प्रकाशक :

सत्पंथ प्रकाशन समिति, प्रेरणा पीठ-पीराणा, ता. दसक्रोइ, जि. अमदावाद-३८२८२५.
फोन : (०२७१८) २८८२२७, २८८२२९, २८८८१२.



(१) आचार्य शाणाकाका गुरु
इमामशाह महाराज वि. संवत १४७६ से १५०८



(२) आचार्य श्री शामजीकाका गुरु
शाणाकाका वि. संवत १५०८ से १५३८



(३) आचार्य श्री कृष्णकाका गुरु
सामजीकाका वि. संवत १५३८ से १५७३



(४) आचार्य श्री सामजीकाका गुरु
कृष्णकाका वि. संवत १५७३ से १६०३



(५) आचार्य श्री रैयाकाका गुरु
सामजीकाका वि. संवत १६०३ से १६२५



(६) आचार्य श्री रामजीकाका गुरु
रैयाकाका वि. संवत १६२५ से १६४४



(७) आचार्य श्री नथुकाका गुरु
रामजीकाका वि. संवत १६५५ से १६८३



(८) आचार्य श्री भुलाकाका गुरु
नथुकाका वि. संवत १६८३ से १७०७



(९) आचार्य श्री प्रागजीकाका गुरु
भुलाकाका वि. संवत १७०७ से १७३१



(१०) आचार्य श्री नाथाकाका गुरु
प्रागजीकाका वि. संवत १७३१ से १७५६



(११) आचार्य श्री दिपाकाका गुरु
नाथाकाका वि. संवत १७५६ से १७७६



(१२) आचार्य श्री मनजीकाका गुरु
दिपाकाका वि. संवत १७७६ से १८०१



(१३) आचार्य नथुकाका गुरु
मनजीकाका वि. संवत १८०१ से १८२३



(१४) आचार्य श्री नागजीकाका गुरु
नथुकाका वि. संवत १८२३ से १८४८



(१५) आचार्य श्री सामजीकाका गुरु
नागजीकाका वि. संवत १८४८ से १८७८



(१६) आचार्य श्री पेथाकाका गुरु
सामजीकाका वि. संवत १८७८ से ११०५



(१७) आचार्य श्री नथुकाका गुरु
पेथाकाका वि. संवत ११०५ से ११३७



(१८) आचार्य श्री करमशीकाका गुरु
नथुकाका वि. संवत ११३७ से ११५७



(१९) आचार्य श्री लक्ष्मणकाका गुरु
करमशीकाका वि. संवत ११५७ से ११८४



(२०) आचार्य श्री रामजीकाका गुरु
लक्ष्मणकाका वि. संवत १६८३ से १७०७



(२१) आचार्य श्री सवजीकाका गुरु
रामजीकाका वि. संवत २०२४ से २०४२



(२२) आदि जगद्गुरु श्री करसनदासजी महाराज
गुरु सवजीकाका वि. संवत २०४२ से २०५८

॥ सनातन सत्पंथ ॥



(२३) जगद्गुरु श्री नानकदासजी महाराज
गुरु करसनदासजी महाराज वि. संवत २०५९